परम श्रद्धेय गणिवर्य डॉ. राजेन्द्र विजय जी महाराज साहब

सुखी परिवार अभियान

आपकी खुशी हमारी खुशी
आपका सुख हमारा सुख

सुखी परिवार फाउंडेशन

158, अंसल चेंबर-2, 6-भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली-110066
Email: sukhiparivar.del@gmail.com | Website: sukhiparivar.in

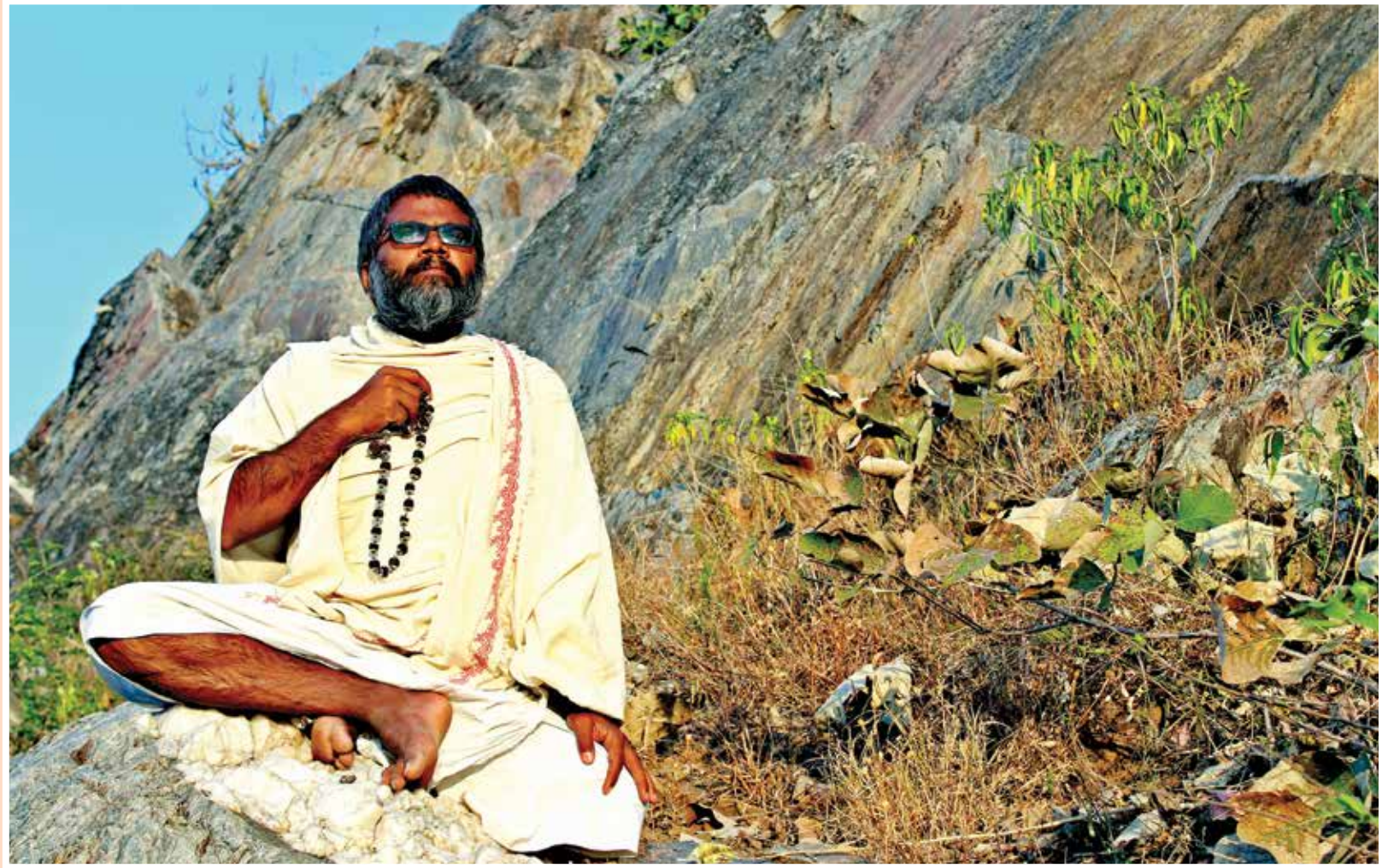

सुखी परिवार अभियान आज राष्ट्रीय स्तर पर अहिंसा, नैतिकता, सदाचार और स्वस्थ मूल्यों की स्थापना का एक अभिनव उपक्रम बनकर प्रस्तुत है। इसके माध्यम से जहां वैचारिक स्तर पर सकारात्मक वातावरण का निर्माण हुआ है वहीं सेवा, चिकित्सा, शिक्षा, जीवदया और जनकल्याण के अनेक उपक्रम संचालित किए जा रहे हैं।

– गणिवर्य डॉ. राजेन्द्र विजय जी महाराज सा.

परम श्रद्धेय गणिवर्य डॉ. राजेन्द्र विजय जी महाराज साहब

भारत की संत परंपरा में गणिवर्य डॉ. राजेन्द्र विजय जी महाराज सा. का एक विशिष्ट स्थान है। भगवान महावीर के सिद्धांतों को जीवन दर्शन की भूमिका पर जीने वाले इस संत चेतना ने संपूर्ण मानवजाति के परमार्थ में स्वयं को समर्पित कर समय, शक्ति, श्रम और सोच को एक सार्थक पहचान दी है। आपके निर्बंध कर्तृत्व ने राष्ट्रीय एकता, सद्भावना एवं परोपकार की दिशा में संपूर्ण राष्ट्र को प्रेरक दिशाबोध दिया है। आप आचार्य श्रीमद् विजयानंद सूरीश्वर प्रसिद्ध नाम श्री आत्मारामजी की पाट परंपरा के परमार क्षत्रियोद्धारक, कलिकाल चिंतामणि, गच्छाधिपति श्री विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी महाराज के शिष्य बने। आपका संपूर्ण जीवन त्याग और तपस्या से ओत-प्रोत है।

गणिवर्य डॉ. राजेन्द्र विजय जी महाराज सा. का जन्म गुजरात के बड़ौदा जिले के बलद गांव में सुश्रावक श्री गंभीरसिंहजी जैन की धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती अमितादेवी जैन की कुक्षि से 19 मई 1974 को हुआ। ग्यारह वर्ष की अल्प आयु में आपने साधनामय जीवन की ओर अपने चरण अग्रसर किए एवं एक वर्ष तक गुरु सान्निध्य में गहन तप और ज्ञान गंगा में निमज्जन करके बारह वर्ष की आयु में 1986 की अक्षय तृतीया के शुभ दिन अकोला (महाराष्ट्र) में संयम जीवन अंगीकार किया। गुजराती, हिन्दी, संस्कृत, पंजाबी, प्राकृत आदि भाषा के ज्ञान के साथ जिन-धर्म, दर्शन, साध्वाचार, तत्वार्थ, आगम आदि ग्रंथों का अपने गुरु की निश्रा में 18 वर्षों तक अध्ययन किया।

सखी परिवार अभियान

आपकी खुशी हमारी खुशी
आपका सुख हमारा सुख

इस सदी में भारतीय संतों, मनीषियों और संस्कृतिकर्मियों के मौलिक चिंतन एवं अनुसंधान ने संसार को चमत्कृत किया है। समस्या यह नहीं है कि भारतीय लोगों ने अपनी अंतर्दृष्टि खो दी है। समस्या यह है कि उन्होंने अपना आत्मविश्वास खो दिया है। आज सबसे बड़ी अपेक्षा यह है कि भारत अपना मूल्यांकन करना सीखे और खोई प्रतिष्ठा को पुनः अर्जित करे।

– गणिवर्य डॉ. राजेन्द्र विजय जी महाराज सा.

गणिवर्य डॉ. राजेन्द्र विजय जी महाराज सा. की निष्ठा अहिंसा में है। अपनी निष्ठा के अनुरूप जीवन जीने के लिए उन्होंने अहिंसा का महाव्रत स्वीकार कर मुनि जीवन को अंगीकार किया। अहिंसा को व्यावहारिक रूप देने के लिए उन्होंने अहिंसा का प्रशिक्षण अपने गुरु आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी महाराज से प्राप्त किया। अहिंसा की महत्ता को उजागर करने के लिए उन्होंने अहिंसा पर प्रवचन किए, लेख लिखे, गांव-गांव की यात्रा की, हिंसा प्रभावित आदिवासी क्षेत्रों में सघन उपक्रम किए। अहिंसा को लोकजीवन में प्रतिष्ठित करने और अहिंसक शक्ति को जागृत करने के उद्देश्य से आपने सुखी परिवार अभियान की परिकल्पना प्रस्तुत की।

गणिवर्य डॉ. राजेन्द्र विजय जी महाराज सा. का मानना है कि अहिंसा में सौदा नहीं होता। तुम इतना करो तो मैं इतना करूं, यह स्वार्थ है। जबकि अहिंसा स्वार्थ नहीं, परार्थ और परोपकार है। अहिंसा के बारे में उनके प्रवचनों और आलेखों की विशेषता है कि वे इतने समग्र हैं कि एक ही विषय पर इतना विशद विवेचन और इतना बहुआयामी विश्लेषण कहीं अन्यत्र नहीं मिलेगा।

गणिवर्य डॉ. राजेन्द्र विजय जी महाराज सा. ने जैन धर्म और अहिंसा का प्रचार-प्रसार उन आदिवासी क्षेत्रों में व्यापकता से किया है जो जैनेत्तर क्षेत्र कहे जाते हैं और जिनमें हिंसा की बहुलता है। गुजरात के बड़ोदरा जिले के आदिवासी अंचल के लोगों में उनके विचारों और अहिंसक कार्यक्रमों का इतना व्यापक प्रभाव स्थापित हुआ है कि लाखों की संख्या में लोगों ने न केवल हिंसा को छोड़ा है बल्कि अपनी जीवन शैली को अहिंसा के अनुरूप ढाला है।

गणिवर्य डॉ. राजेन्द्र विजय जी महाराज सा. ओजस्वी वक्ता हैं। जब आप बोलते हैं तो हजारों नर-नारियों की भीड़ मंत्रमुग्ध होकर आपको सुनती है। आप अपने प्रवचनों में धर्म के गूढ़ तत्वों की ही चर्चा नहीं करते, बल्कि उन्हें इतना बोधगम्य बना देते हैं कि आपकी बात सहज ही सामान्य से सामान्य व्यक्ति के गले उतर जाती है।

सुखी परिवार अभियान

आपकी खुशी हमारी खुशी
आपका सुख हमारा सुख

धर्म व्यक्तित्व रूपांतरण की प्रक्रिया है और राजनीति शासन को सही दिशा में ले चलने वाली प्रक्रिया है। राजनीति का सूत्र है दूसरों को देखो और धर्म का सूत्र है अपने आप को देखो। यहां संस्कृति कहती है दूसरों को भी देखो, खुद को भी देखो और जो सृष्टि हित में हो उसका पालन करो। इसके लिए हम सबको जागरूक होना होगा।

– गणिवर्य डॉ. राजेन्द्र विजय जी महाराज सा.

गणिवर्य डॉ. राजेन्द्र विजय जी महाराज सा. जितने प्रभावशाली वक्ता हैं, उतने ही प्रभावशाली लेखक भी हैं। 'सुखी परिवार के सूत्र', 'मंत्रविद्या के सफल प्रयोग', 'गायः हर युग की कामधेनु' और 'आदिवासी सभ्यता एवं संस्कृति के सूत्र' आपके उत्कृष्ट लेखन के परिचायक हैं। आपका जीवन लोक-मंगल के लिए समर्पित है। इसलिए आपका लेखन भी एक ऊंचे ध्येय से प्रेरित है। आप परोपकार एवं परमार्थ के प्रेरक व्यक्तित्व हैं। आपने पिछड़े वर्ग के नैतिक उत्थान हेतु शिक्षा के क्षेत्र में दस्तक दी है। प्रवचनों के माध्यम से संस्कार निर्माण का कार्य किया है।

मनुष्य अच्छा मनुष्य बने, उसके अंदर मानवीय गुणों का विकास हो, वह नैतिक और चारित्रिक दृष्टि से उन्नत बने, अपने कर्तव्य को वह जाने और निष्ठापूर्वक उसका पालन करे, समष्टि के हित में वह अपना हित अनुभव करे - इस दृष्टि से आपने 'सुखी परिवार अभियान' के रूप में एक समग्र आदर्श परिवार की परिकल्पना प्रस्तुत की है। यह व्यक्ति और परिवार से स्वस्थ समाज और स्वस्थ समाज से स्वस्थ राष्ट्र की आधार-भूमि है। सुखी परिवार अभियान आज राष्ट्रीय स्तर पर अहिंसा, नैतिकता, सदाचार और स्वस्थ मूल्यों की स्थापना का एक अभिनव उपक्रम बनकर प्रस्तुत है। इसके माध्यम से जहां वैचारिक स्तर पर सकारात्मक वातावरण का निर्माण हुआ है वहीं सेवा, चिकित्सा, शिक्षा, जीवदया और जनकल्याण के अनेक उपक्रम संचालित किए जा रहे हैं। विशेषतः गुजरात के आदिवासी अंचल में शिक्षा और चिकित्सा के कार्यक्रम संचालित हो रहे हैं। वहीं पर बोड़ेली तहसील में बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए 'ब्रह्मी सुंदरी कन्या छात्रावास' तथा 'सुखी परिवार ट्राइबल ग्रामोद्योग' का संचालन किया जा रहा है। बलद गांव में 'सुखी परिवार जीवदया गौशाला' एवं कवांट में 'एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय' सफलतापूर्वक आदिवासी क्षेत्र में ज्ञान का प्रकाश फैला रहा है।

आपकी खुशी हमारी खुशी
आपका सुख हमारा सुख

एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय विशेषतया ग्रामीण जनजीवन के उन्नयन और उत्थान के साथ शिक्षा का एक प्रकल्प है। बिना किसी जाति, वर्ग, वर्ण के भेद के जरूरतमंदों की जरूरतों को पूरा करना इसका लक्ष्य है। हमारी शिक्षा का मूल लक्ष्य आधुनिक प्रतिस्पर्धी शिक्षा के साथ-साथ अपनी संस्कृति और संस्कारों पर बल देना है।

– गणिवर्य डॉ. राजेन्द्र विजय जी महाराज सा.

एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय

कवांट, गुजरात

बड़ोदरा के आदिवासी क्षेत्र कवांट में आज एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय पूरी दृढ़ता के साथ ज्ञान पताका फहरा रहा है। 28200 वर्ग मीटर के विशाल भूखंड में खड़ी 10500 वर्ग मीटर की भव्य आधुनिक इमारत में शिक्षा, सेवा और संस्कार की अलख जल रही है। पूरी तरह आवासीय कक्षा 6 से 12वीं तक के इस विद्यालय को सुखी परिवार फाउंडेशन और गुजरात सरकार के आदिवासी मंत्रालय के आम जन सहभागिता कार्यक्रम के संयुक्त संचालन के तहत चलाया जा रहा है। वर्तमान में यहां लगभग 900 विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। विद्यालय में कला, विज्ञान, तकनीकी शिक्षा और कंप्यूटर प्रशिक्षण के कोर्स संचालित किये जा रहे हैं। विद्यालय में एक स्वतंत्र प्रशासनिक ब्लॉक है जिसमें ऑफिस, लाइब्रेरी, कैंटीन तथा छात्रों एवं अध्यापकों के मीटिंग रूम बने हैं। स्कूल परिसर में एकेडमिक एवं प्रशासनिक कर्मचारियों के रहने की भी उचित व्यवस्था की गयी है।

यह विद्यालय केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संबद्ध है। विद्यालय में आदिवासी छात्र-छात्राओं के लिए शिक्षा एवं छात्रावास की व्यवस्था निःशुल्क है। आदिवासी क्षेत्र के अलावा देश के अन्य क्षेत्रों के बच्चे भी यहां परीक्षण और साक्षात्कार की प्रक्रिया पूरी करने के बाद प्रवेश ले सकते हैं।

अभी तक इस पिछड़े क्षेत्र में कोई स्तरीय विद्यालय न होने से यहां के बच्चों के सामने उच्च शिक्षा एक सपना जैसा था। आदिवासी एवं पिछड़े क्षेत्र के गरीब, जरूरतमंद एवं अभावग्रस्त छात्रों को बहुत परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। छात्रों की इस पीड़ा को युवा मनीषी गणिवर्य डॉ. राजेन्द्र विजय जी महाराज सा. ने महसूस किया और सुखी परिवार फाउंडेशन के तहत एक ऐसा विद्यालय स्थापित करने की सोची जिसमें आधुनिक, प्रतिस्पर्धी और तकनीकी शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जाए ताकि यहां के बच्चे भी देश के अन्य बच्चों से कमतर न हों। गुरुजी का यह सपना आज पूरी शानो-शौकत के साथ ज्ञान की प्रकाश किरणें फैला रहा है। गुरुजी के कुशल मार्गदर्शन में आज यह विद्यालय दिनोंदिन उन्नति करते हुए आदिवासी शिक्षा का एक विशिष्ट आयाम बन चुका है।

सुखी परिवार अभियान

आपकी खुशी हमारी खुशी
आपका सुख हमारा सुख

हमारी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति का ध्येय सदा से जीवन का श्रेष्ठ स्वरूप उपस्थित करके उसका उत्कर्ष बढ़ाने और उसे उन्नत बनाने का रहा है। परन्तु आज राजनीति के दांवपेंच, महत्वाकांक्षाओं की वितृष्णा, अपने को स्थापित करने की प्रतिस्पर्धा और स्वार्थों की भीड़ के बीच श्रेष्ठता के मूल्यों को खोज पाना बहुत कठिन है, किन्तु असंभव नहीं।

– गणिवर्य डॉ. राजेन्द्र विजय जी महाराज सा.

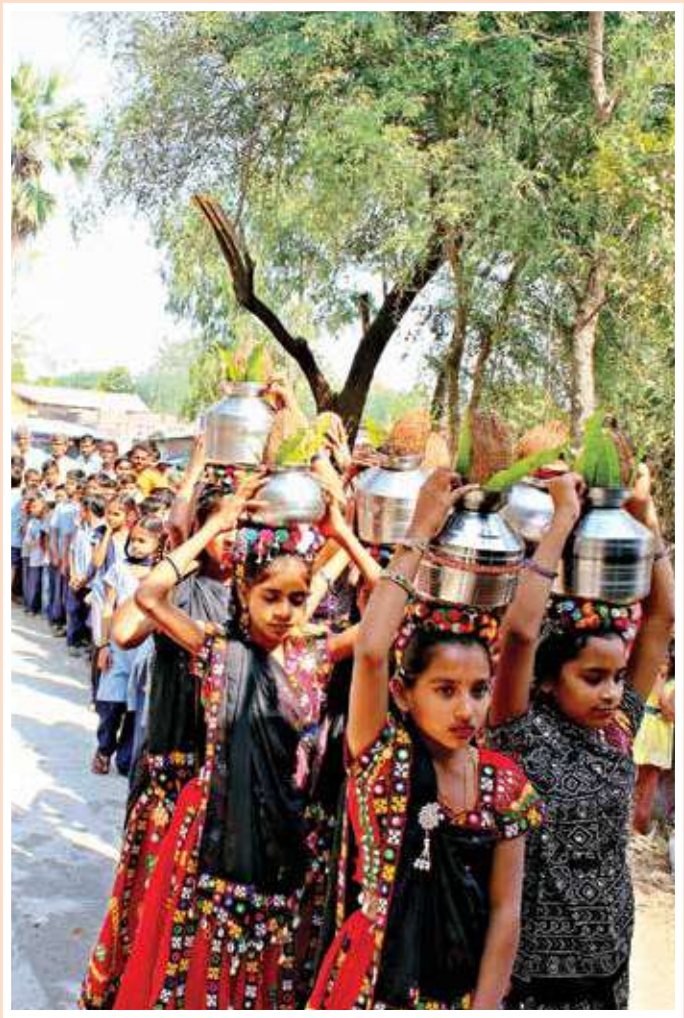

अर्हम्

ब्रह्मी सुंदरी कन्या छात्रावास

बोड़ेली, गुजरात

बोड़ेली में ब्रह्मी सुंदरी कन्या छात्रावास की एक अभिनव गतिविधि प्रारंभ की गई है जो लंबे समय से इस आदिवासी अंचल की शिक्षा में रुचि रखने वाली कन्याओं के लिए एक विशिष्ट शिक्षामूलक गतिविधि के रूप में इस क्षेत्र में संचालित है। लंबे समय से इस क्षेत्र की कन्याओं को बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। एक तरह से इस क्षेत्र की कन्याओं की उच्चा शिक्षा पर अवरोध आ गया था। इस जरूरत को महसूस करते हुए गणिवर्य डॉ. राजेन्द्र विजय जी महाराज द्वारा सुखी परिवार फाउंडेशन के अंतर्गत ब्रह्मी सुंदरी कन्या छात्रावास प्रारंभ किया गया। फाउंडेशन का मुख्य लक्ष्य आदिवासी एवं पिछड़े क्षेत्र की गरीब, जरूरतमंद एवं अभावग्रस्त कन्याओं को उच्च शिक्षा के लिए छात्रावास की आवश्यकता को पूरा करना एवं कन्या शिक्षा को प्रोत्साहन देना है। फाउंडेशन का मुख्य उद्देश्य शिक्षा और जन-कल्याण है, इसके साथ ही सद्विचारों को बल देना, नैतिकता और चरित्रमूलक गतिविधियों को संगठित करना एवं जीवन निर्माण के लक्ष्य को आदिवासी एवं पिछड़ेजन तक पहुंचाना है।

कन्याओं को विकास पथ पर अग्रसर करने की विभिन्न प्रवृत्तियों एवं कन्या कल्याणकारी गतिविधियों का एक सुंदर स्वरूप है यह छात्रावास। वर्तमान में बोड़ेली में यह छात्रावास सुनियोजित तरीके से संचालित किया जा रहा है जिसमें करीब 90 छात्राएं यहां रहकर शिक्षा के साथ-साथ इस केन्द्र द्वारा दी जा रही तकनीकी शिक्षा एवं अन्य शिक्षाओं का लाभ ले रही हैं। इन छात्राओं को सभी शिक्षाएं निःशुल्क प्रदान की जा रही हैं। अब तक इस छात्रावास से लगभग 800 कन्याएं सफलतापूर्वक पढ़ाई कर उच्च शिक्षा अथवा रोजगार के लिए अन्यत्र जा चुकी हैं।

सुखी परिवार अभियान

आपकी खुशी हमारी खुशी
आपका सुख हमारा सुख

गौ हमारी सभ्यता और संस्कृति का मेरूदंड है। गौ-विहीन भारतीय संस्कृति की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती। गौ हमारी राष्ट्र लक्ष्मी है। वह हमारी समृद्धि की आधारशिला है। गौ ने हमें जीवनदायिनी शक्ति दी है। हमें आरोग्य, आनंद और शांति प्रदान की है। गौ हमारी सारी आर्थिक योजनाओं और सारी आध्यात्मिक शक्तियों का स्रोत है।

– गणिवर्य डॉ. राजेन्द्र विजय जी महाराज सा.

सुखी परिवार जीवदया गौशाला

बलद ग्राम, गुजरात

सुखी परिवार फाउंडेशन द्वारा संचालित श्री परिवार गौ सेवा ट्रस्ट (रजि.) के तहत समाजोत्थान, शिक्षा, सेवा, जन-कल्याण के साथ-साथ जीवदया के अनेक सेवामूलक एवं कल्याणकारी कार्य किये जा रहे हैं। बलद गांव में सुखी परिवार गौ मंदिर एवं गौशाला की एक सेवामूलक अभिनव गतिविधि प्रारंभ की गई है जो आदिवासी अंचल बलद गांव, कवांट, बोड़ेली, नाथपुरी, नसवाड़ी, रंगपुर आदि विभिन्न गांव-दराजों में बीमार, उपेक्षित एवं अनुपयोगी पशुओं के भरण-पोषण, जीवन-निर्वाह एवं चिकित्सा का केन्द्र बना है। बलद गांव में निर्मित यह गौशाला जीवदया की एक विशद् एवं उपयोगी योजना है जिसमें इन क्षेत्रों के अलावा सुदूर क्षेत्रों से भी पशुओं को लाकर उनकी देखभाल की जाती है और बीमार पशुओं का समुचित इलाज किया जाता है। इस गौशाला द्वारा विभिन्न जगहों से लाये गये बैल एवं अन्य पशु बहुत कम कीमत पर इस क्षेत्र के किसानों को वितरित किये गये हैं। अब तक करीब 25,000 बैल इस क्षेत्र के किसानों को न्यूनतम लागत पर दिये गये हैं जिससे इस क्षेत्र में खेती की संभावनाएं बढ़ी हैं। जो पशु बूचड़खाने में कटने के लिए जा रहे थे उनकी जीवन रक्षा करके एक उपकार का कार्य किया गया है।

इस फाउंडेशन का मुख्य लक्ष्य बीमार एवं उपेक्षित गोवंश को समुचित जीवन-निर्वाह की सुख-सुविधाएं उपलब्ध कराना है। विशेषतः समय पर चारा-पानी एवं अन्य जरूरत का खाद्य-पदार्थ समयबद्ध रूप से उपलब्ध कराना, बीमार पशुओं का इलाज, रहने के लिए शेडयुक्त स्थान, शुद्ध पानी आदि उपलब्ध कराना है। इस वक्त यहां पर लगभग 300 गायें और गोवंश हैं।

सुखी परिवार अभियान

आपकी खुशी हमारी खुशी
आपका सुख हमारा सुख

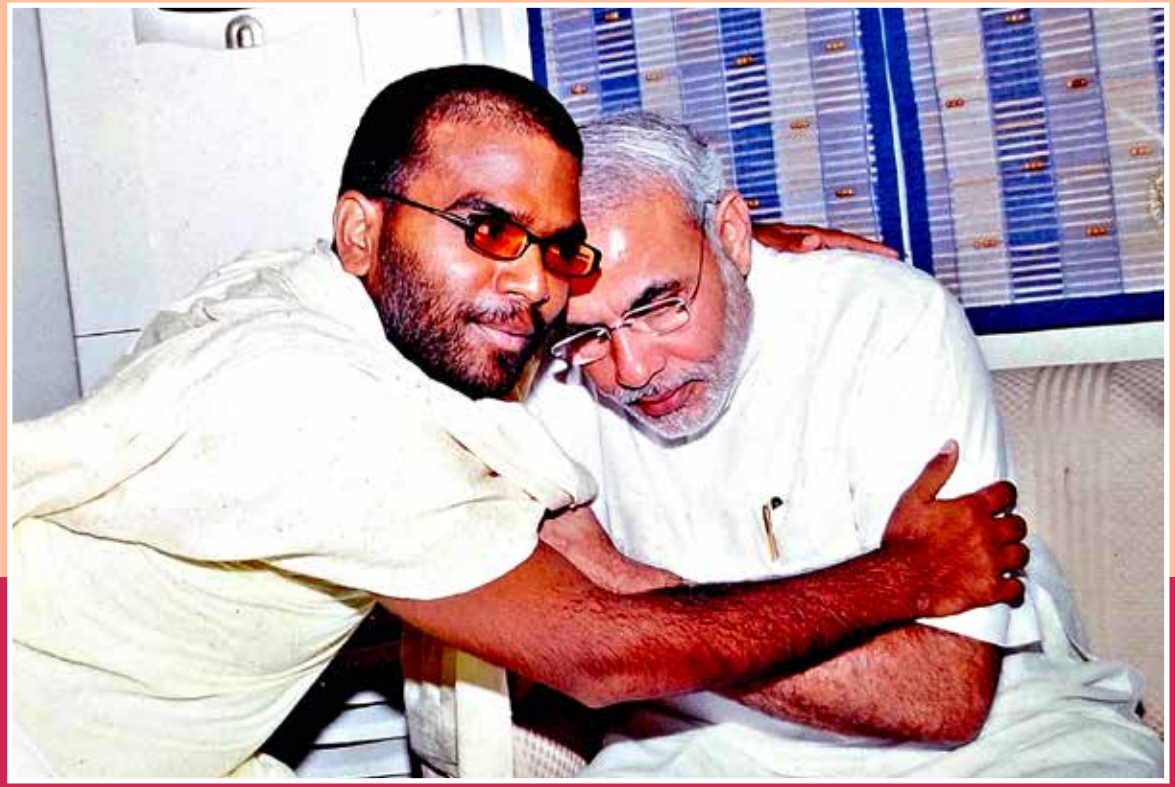

2016

भावी कार्ययोजना

- शिक्षा को सर्वसुलभ बनाने के लिए स्कूल-कॉलेजों का निर्माण करना
- आदिवासी क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधा के लिए मेडिकल कॉलेज का निर्माण करना
- कौशल विकास पर जोर देकर युवाओं को रोजगार के अवसर मुहैया करवाना
- गौमाता और गोवंश के संरक्षण के लिए गौशालाओं का निर्माण करना
- प्राकृतिक एवं जैविक खेती को बढ़ावा देकर भूमि की सेहत में सुधार लाना
- आदिवासी क्षेत्रों में व्याप्त अंधविश्वास एवं रूढ़िवादी परंपरा का उन्मूलन करना
- औषधीय पौधों की खेती के जरिए परंपरागत चिकित्सा पद्धति को बढ़ावा देना
- भयमुक्त और अपराधमुक्त समाज के निर्माण के लिए नशामुक्ति पर जोर देना
- परस्पर सहयोग, आपसी मेल-मिलाप और सांस्कृतिक भाईचारे को बढ़ावा देना
- भगवान महावीर के अहिंसा परमोधर्म : के संदेश का प्रचार-प्रसार करना
- पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधारोपण को बढ़ावा देकर प्रदूषण से निजात पाना
- जल ही जीवन है - इस ध्येय वाक्य के साथ पानी की हर बूंद को सहेजना
- जल-जंगल-जमीन के संरक्षण में आदिवासी समाज की भागीदारी सुनिश्चित करना
- ग्लोबल वार्मिंग के खतरे के बीच जीव-सृष्टि को बचाने के लिए प्रयास करना

ललित गर्ग
अध्यक्ष

आपकी खुशी हमारी खुशी
आपका सुख हमारा सुख

सुखी परिवार फाउंडेशन

गुजरात कार्यालय: श्री विमलनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ
बलदगाम, पोस्ट कवांट, जिला छोटा उदेपुर, गुजरात-391170
संपर्क : 9099249150